उपसंहार

हिन्दी साहित्य का आधुनिक युग स्वातंत्र्योत्तर काल साहित्य सम्बन्धी कुछ नई दिशाओं का उद्‌घाटन काल रहा है। इस युग में अविर्भूत निराशा, कृण्ठा, वितृष्णा, शोषितों की पीडा, महँगाई, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी आदि का उद्‌घाटन कभी व्यंग्य और विनोद के माध्यम से अभिव्यक्त हुआ। युग की भावनाओं को वाचा देनेवाले तत्कालीन साहित्यकारों में एक थे भीष्म साहनी। साहनी प्रेमचंदोत्तर युग के बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार थे। एक सफल व्यग्यकार होने के साथ साथ कथा लेखक के रूप में भी उनकी उपलब्धियाँ विशेष हैं। हिन्दी के जनपद मूलक कथाकारों में उनका एक विशिष्ट स्थान है।

भीष्म साहनी नैतिकता के विश्वासी थे। समाज का खोखलापन उनके लिए असह्य था। अपनी स्वस्थ जीवन–दृष्टि के कारण वे अपने परिवेश से असंतुष्ट थे। समाज की मूल्य हीनता ने उन्हें कलम चलाने के लिए मजबूर कर दिया था। उनकी कथाओं में मूल्य हीनता के प्रति जबरदस्त आक्रोश व्यक्त हुआ था। उनकी कथाओं में मूल्य हीनता के प्रति जबरदस्त आक्रोश व्यक्त हुआ है। भीष्म साहनी के कथा–साहित्य में जहाँ समाज के शोषण तथा अन्याय के प्रति आक्रोश व्यक्त हुआ है, वहाँ मानव के प्रति आस्थावाद भी। वे स्वयं मानवीय गुण सम्पन्न व्यक्ति थे तथा मानवमूल्य के विश्वासी थे। साहनी के लेखन में अनुभवजन्य परिपक्वता है। उन्होने कबीर की तरह दुनिया को अच्छी तरह जाँचा परखा है। उन्होने समाज के हर कोने में व्याप्त विसंगतियों और पाखण्ड से साक्षात्कार किया, आम आदमी के दर्द को अनुभव किया और उसकी बेहतरी के लिए अपने ढंग से प्रयास शुरू किया। स्वतंत्रता के बाद का त्रासमय यथार्थ ही साहनी के कथा साहित्य की जमीन है। वर्षो बाद प्राप्त स्वतंत्रता और नेहरू के नेतृत्व से लोगों ने आशा की थी कि अब हालत सुधरेंगी, किन्तु आजादी का पूरा फायदा एक खास वर्ग ने ही उठाया। मेहनतकश जनता गरीबी और शोषण से मुक्ति नहीं पा सकी। राजनीति मनुष्य के जीवन में अहं भूमिका निभाती है, अत: साहनी जैसे लेखक मानव मूल्य और मानवीय संवेदना का प्रश्न लेकर राजनीति से जुड्ते हैं। हिन्दी साहित्य को साहनी की एक देन है– राजनीति और साहित्य का अटूट सम्बन्ध। साहनी ने दिखा दिया कि राजनीति और लेखन दो विरोधी बातें नहीं है। जो

शासक यह सलाह देते है कि लेखक को राजनीति से अलग रहना चाहिए, वे चालाक राजनीति बाज हैं। साहनी ने सही राजनीति से परिचय कराया है।

इसे साहनी के लेखन की विशिष्टता ही मानी जायेगी कि उनकी लघुकथाएँ, कहानियाँ या उपन्यास किसी एक निष्कर्ष पर नहीं टिके है। वे हर पाठक को अलग–अलग रूप से आकर्षित करते हैं। कोई उनके कथ्य की तरलता पर मोहित होता है, तो कोई घटना विहीनता पर । कोई उनकी भाषा पर मुग्ध है, तो कोई उनकी व्यंग्य–विद्या पर। इससे स्पष्ट है कि साहनी के कथा–साहित्य में बहु आयामी विशिष्टता है। साहनी मार्क्सवादी विचारों से प्रेरित है। उन्होने अपनी कथाओं में पूँजीपति और निम्नवर्ग की कश्मकश पर प्रहार किया है तथा आम आदमी में संघर्ष की भावना को चेताया है। साहनी अपनी कहानियों द्वारा वर्ग–चेतना पर विशेष प्रकाश डालते है। वे समाज में पूँजीपति यानि शोषक वर्ग के बारे में लिखते हैं। साहनी मूलत: सामाजिक चेतना के रचनाकार है। इसलिए उनके कथा साहित्य में सामाजिक संदर्भो की प्रामाणिकता और चिन्तन की विश्वसनीयता बडी ताकत के साथ उजागर होती है और युग–सत्य सामाजिक, आर्थिक और नैतिक मूल्यों को हमारे सामने प्रस्तुत करते है।

साहनी अपने अनुभवों को खुद भोगे हुए यथार्थ को और अपने आसपास मौजूद एक बहुत करीबी और आत्मीय दुनिया को अपने विचार का विषय बनाते हैं। जमाने की सारी समस्यायें परसाई की कथा–यात्रा के विभिन्न विचार–बिन्दु है और मूलत: यह समस्यायें सामाजिकता या आर्थिकता है। निरन्तर एक ही दृष्टिकोण से और एक ही यथार्थ को उजागर करते –करते साहनी का गद्य कहीं कहीं कमजोर हो जाता है, लेकिन वह कहीं भी ऊबाऊ नहीं होता। शिल्प सम्बन्धी कोई बडा आग्रह लेकर चलना इस मामले में ठीक न होगा। क्योंकि उनका रचना–कर्म प्रबल मानवीय संवेदनाओं की जमीन पर खडा है। लोग यह जरूर कहते है कि यह मानवीय संवेदना परसाई के वामपंथी सोच का परिणाम है, लेकिन ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' वाले भारत में यह मानवीय संवेदना सामाजिक परिस्थितियों की सहज उपज है। इसलिए हमे यह स्वीकार करना ही होगा कि साहनी का रचनाकर्म लेखकीय चिन्ता का महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

साहनी सामाजिक बुराईयों और जातिवादी रूढियों के खिलाफ एक लम्बी लडाई लड्ते हैं और प्रत्येक स्तर पर होनेवाले अन्याय तक पहुँचाते है। वे नये जाति–वर्गहीन समाज की रचना का सत संकल्प लेकर चलते है और जन सामान्य की हित–चिन्ता उनका मूल लक्ष्य है। साहनी यथार्थवादी कथाकार हैं, तो जीवन की सच्चाईयों को उजागर करनेवाले व्यंग्यकार भी हैं। व्यंग्य की दृष्टि की निरन्तर परिपक्वता ने उन्हें जीवन का एक ऐसा वैज्ञानिक किन्तु मार्मिक व्याख्याकार बनाया है, जिसकी दृष्टि की परिधि में नितान्त दैनिक अनुभव से लगाकर अन्तर्राष्ट्रीय शीत–युद्ध की विकट परिस्थितियों तक शामिल है। उनका कथा साहित्य उनके बहुआयामी व्यक्तित्व का सबूत है। सामाजिक नवनिर्माण की अपनी विशिष्ट चेतना और रचनात्मक उद्देश्य परकता साहनीजी पर हकरसता का आक्षेप जरूर लगाती है, किन्तु रचना के उद्देश्य को देखते हुए यह स्तुत्य है कि साहनी की रचनायें जातिवादी, धनाढ्य, राजनेता और शिक्षित वर्ग के नैतिक एवं सांस्कृतिक स्खलन को उनके सम्पूर्ण घृणित परिवेश के साथ प्रस्तुत करती है। साहनी की दृष्टि, चिंन्तनशक्ति तथा व्यंग्य शैली के शायद ही जीवन का कोई क्षेत्र छूटा हो। उनकी हर कथा के भीतर कोई न कोई उद्देश्य अवश्य समाया रहता है। उनकी कहानियाँ उनकी विचारशैली की घोतक है। साहनी एक प्रतिबद्ध कथाकार है। एक कथाकार अपनी कहानियों से किस तरह सामाजिक चेतना ला सकता है, इसका उदाहरण स्वयं साहनी है। सामाजिक चेतना लाने के प्रयास में साहनी ने जो योगदान दिया है, उसे देखते हुए यह कहा अनुचित न होगा कि साहनी का स्थान सफल साहित्यकारों में स्थित हैं।

साहनीजी की अधिकांश कहानियाँ लघुकथाएँ एवं उपन्यास मध्यम वर्ग का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्होंने अपने कथा–साहित्य में मध्यमवर्गीय अनुभूतियों पर आधारित सन्दर्भो को ही उठाया है। मध्यम वर्ग के व्यक्ति की वैयक्तिक समस्याओं व उसके जीवन के घात प्रतिघातों का जितना सहानुभूतिपूर्ण चित्रण साहनी ने किया है उतना अन्य कथाकार ने शायद ही किया हों। अपनी कहानियों एवं उपन्यासों में साहनी लम्बे संवादो का प्रयोग करते हैं। इन संक्षिप्त संवादों में जो गहराई होती है, वह अत्याधिक प्रवाहपूर्ण और प्रभावी है। यहाँ उनकी कहानी–कला का उत्कर्ष दिखलाई पड्ता है। कम–से–कम शब्दों में हास्य–व्यंग्य के द्वारा अधिक–से–अधिक

कहना साहनीजी की कलात्मक सजागता का परिचायक है। ऐसे ही साहनी के पास भाषा का अपना अलग संस्कार है। यही संस्कार उनकी विशिष्ट पहचान बनाता है। वे भाषा को एक माध्यमभर नहीं, सत्य को पाने का जरिया मानते है। इसलिए वे भाषा के प्रयोग में काफी सतर्कता बरतते हैं। साहनी शब्दों का अधिक प्रयोग नहीं करते। इस मामले में वे असाधारण लाघव से काम लेते हैं। वे शब्दों को बेहद सलीके से प्रयोग करते है। कम से कम शब्दों से अपनी बात कहने की कला साहनी जानते हैं।

साहनी असंभवत: अद्वितीयता के लेखक नहीं, वे संम्भव सामान्यता के साहसी कलाकार है। उनके कथासाहित्य के इस विश्लेषण और मूल्यांकन के संदर्भ में यह उल्लेख करना जरूरी हे कि कई बार बहुत छोटे से मुद्दे को, जिसे हम प्राय: महत्वहीन मानकर टाल देते हैं, इन कथाओं में न केवल उठाया जाता है, बल्कि उसके बहाने प्राय: जीवन की किसी बहुत बडी अर्थ व्याप्ति तक उसे ले जाया जाता है। अर्थ व्याप्ति का यह विस्तार साहनी के व्यंग्य की अत्यंत विशेषताओं में से हक है। उनकी कहानियों में एक छोटी–सी दैनिक घटना, परिस्थिति, अन्तर्विरोधी भाव इतने दूर तक एक महान अर्थ को ढोते हुए ले जाते है और अनुभव या विचार की जिस स्थिति अथवा जिस बिन्दु पर वे पहुँचते है कि उससे किसी भयानक सामाजिक विद्रुप का नंगा साक्षात्कार अथवा विचार की कोई बहुत उच्च भूमिका या किसी अन्तर्विरोध का मार्मिक उद्घाटन होता है।

साहनी एक कथाकार की हैसियत से जीवन में जो कुछ महान और सुन्दर है, उसकी रक्षा करना चाहते हैं। वे ही संसार की सारी असुन्दरता का विरोध करने का साहस प्रदर्शित कर सकते हैं, जो मनुष्य के भीतर और जीवन में चारों ओर जो कुछ भी महनीय है, उसे बचा लेने को आतुर है। वे ही मनुष्य के अन्दर और जीवन में फैली क्षुद्रता के खिलाफ खडे हो सकते है, (जो कुछ जीवन में विद्रुप है, उसके विरूद्ध होने का अर्थ ही है कि मैं असंगति असमानता के खिलाफ हूँ) जो मानव के सबसे चमत्कारिक गुण–जीने की उसी सहज इच्छा का सम्मान करते है तथा जिजीविषा की महानतम शक्ति के विरूद्ध हिंसा और अमानवीयता का विरोध कर सकते है; जो मनुष्य को संवेदनशील देखने की इच्छा से भरे है, वे ही क्रुरता के विरूद्ध हो सकने का साहस

प्रदर्शित्त कर सकते हैं। साहनी का कथा–साहित्य मनुष्य जीवन के सबसे महनीय तत्त्वों के पक्ष में, इस अर्थ में ही विद्रुप असंगति, क्रुरता और हिंसा का रचनात्मक विपक्ष है। साहनी समाज में फैली गंदगी को साफ करना चाहते है, जिससे कि समाज भयानक बिरारियों की लपेट से बच सके, क्योंकि यही गन्दगी संक्रामक रोग फैलाने का कार्य करती है। साहनी यह कार्य केवल निबन्ध के अतिरिक्त कथा के माध्यम से साहनीजी ने अपने विचारों को आम मानवी तक पहुंचाना चाहते थे। यही कारण है कि साहनी के साहित्य में कथासाहित्य का विशेष महत्व है। साहनी का कथा साहित्य इस जड हो गये परिवेश पर, इस मानवीय निराशा पर, लूट खसोटा और भोग पर, किसान और मजदूर की दुर्दशा पर छात्रो की अराजकता और दिशाहीनता पर, धार्मिक पाखण्ड और शोषण पर, इंसानी रिश्तों की समाप्त होती गरिमा पर, गरीबी और भूख पर, अकाल और मौत पर, पूँजीवादी समाज रचना की बुराइयों पर और इससे पैदा सांस्कृतिक वैचारिक जड्ता पर निर्मित हुआ है। उनके कथा साहित्य का आधार हमारा सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जगत है, जिसमें आज के मनुष्य का कर्म निषेध हो गया है और चारों ओर अँधेरा छाया हुआ है।

अपने कथा–साहित्य में लोगों को उनके असली यथार्थ से साक्षात्कार कराने के लिए साहनी उन विकृतियों को उजागर करते हैं, जो आज की वास्तविकता है। उनकी कहानियों का महत्त्व एक इस तथ्य में कहा जा सकता है कि हिन्दी कथा साहित्य में घनघोर रूमानियत के दौर में वही अकेले ऐसे कहानीकार नजर आते हैं, जिन पर इस रूमानियत का हल्का सा भी असर नहीं दिखाई देता। इसके विपरीत वे इस रूमानियत पर अपने तीखे व्यंग्य प्रहार करते हैं। यथार्थवाद का खुरदरा और पैना दृष्टिकोण एक क्षण के लिए भी धुँधला नहीं पड्ता। साहनी के कथा–साहित्य का कितना युगान्तकारी महत्त्व है, इस बात का पता इस तथ्य से, चलता है कि 'नयी कहानी' धारा के दोनों चोटी के कहानीकारों – भीष्मसाहनी और परसाई की सफलता का रहस्य भी बहुत कुछ समाज दर्शन ही है। अन्य कथाकारों की अपेक्षा साहनी की अधिक सफलता और उच्चतर प्रतिष्ठा की एक वजह यह भी है कि व्यंग्य उनके गद्य में एक सहायक या गौण तत्त्व के रूप में नहीं, बल्कि उनके यथार्थवादी दृष्टिकोण और कलात्मक पद्धति में घुला–मिला उनके मूलाधार के रूप में आता है।

साहनी ने भारतीय समाज की वर्ग–विसंगति को पहचाना है और उसे अपने कथा साहित्य में खोल–खोलकर पर्दाफाश किया है। खूब उघाड है तथा उसके मर्म स्थलों पर चोटें की है। इस दृष्टि से साहनी ने भारतीय जीवन दर्शन की मार्क्सवादी मीमांसा की है। उसकी क्षुद्रतापूर्ण असलियत को निर्ममता पूर्वक सामने रख दिया है। साहनी के कथा साहित्य में प्रेमचंद की तरह विविधता और विस्तार भी है। लेकिन अन्तर यह है कि प्रेमचंद ने शोषण के दुष्परिणामों से भावात्मक हल निकाले है, क्योंकि प्रेमचंद के समय तक आस्था विद्यमान थी, जबकि साहनी की वर्ग दृष्टि परिपक्व उसी की अगली कडी है, अत: इन्होनें शोषण की व्यवस्था और उसके परिणामो का चित्रण आलोचनात्मक ढंग से किया है, जो युगानुरूप यथार्थवादी है। उनके कथा साहित्य के अध्ययन से एक सुखद अनुभूति यह भी होती है कि उनकी दृष्टि जीवन, समाज और आज की राजनीति में व्याप्त लगभग उन समस्त असंगतियों की ओर गयी है, जिससे आज का सामान्य जन पीड्ति और त्रस्त है।

इस तरह साहनी का कथा साहित्य हमारे आसपास के वर्तमान जीवन का वास्तविक इतिहास है। इसमें छिपा हुआ जीवनमूल्य है, जो इसको केवल कथा कहानी के रूप में पढकर, मन बहलाव कर रख देनेवाल नहीं, वरन् वर्तमान और भविष्य के जीवन दर्शन का झरोखा बना देता है। कहने का तात्पर्य यह है कि साहनी का कथा–साहित्य फिल्मी या काल्पनिक नहीं, वरन् वास्तविक, यथार्थ और विश्वसनीय एवं तथ्य–साहित्य को पढकर हम अपने आसपास के जीवन को साक्षात कर सकते हैं। साहनी ने अपने कथा साहित्य द्वारा मानव समाज के कलुष और अशिव को क्षत विक्षत करने की भरसक कोशिश की है। व्यक्तिगत पारिवारिक, सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्रों से अनुभवों को बटोरते हुए, अपनी जागरूक और वैज्ञानिक विश्व दृष्टि द्वारा उन्हें एक तर्क संगत परिणति प्रदान करते हुए और अपनी प्रतिभा का उत्तरोत्तर विकास करते हुए कथा साहित्य के क्षेत्र में साहनी ने एक सिद्धावस्था प्राप्त कर ली है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि साहनी हिन्दी के सफल कथाकार हैं। साहनी ने हिन्दी लघुकथा को एक ठोस एवं प्रौढ रूप प्रसाद किया है तथा हिन्दी कहानी एवं उपन्यास के परम्परागत दायरें को तोड है। उनकी कथायें हिन्दी कथा साहित्य के रूमानी दौर का अतिक्रमण

करके जीवन की विडम्बनाओं का यथार्थ प्रस्तुत करती है। साहनीने अपने कथा साहित्य में आम मानव के जीवन संघर्ष की अभिव्यक्ति के नये आयाम निरूपित किये है। इसीलिए उनका कथा साहित्य विशिष्टता की सीमा तक कथा साहित्य की प्रचलित धारा से अलग है। कथ्य के साथ शिल्प के स्तर पर भी जो प्रयोगधर्मिता साहनी ने दिखाई है, उसे हिन्दी कथा साहित्य की उपलब्धि माना जा सकता है। निर्विवाद रूप से यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि यह साहनीजी की लेखकीय प्रतिबद्धता का ही प्रमाण है कि उन्होने अपने लेखन से हिन्दी कथा–साहित्य को समृद्ध ही नहीं किया, वरन् एक नयी दिशा भी दी है।